रूबी लाल की *'एम्प्रेस : द एस्टोनिशिंग रेन ऑफ़ नूर जहाँ '* के लिए प्रशंसा के कुछ शब्द

"लाल द्वारा लिखित जीवनी में नूर जहाँ के अपेक्षाकृत बहुत तेज़ी से सत्ता के शीर्ष तक पहुंचने और उससे भी तेज़ी से नीचे आने का घटनाक्रम शामिल किया गया है. यह किताब नूर जहाँ को एक बार फिर इसकी पूरी शान के साथ पेश करती है. "

— जेन सिआबतारी, *बीबीसी*

"एक महिला की चमकदार जीवनी इतिहास से बाहर निकाल दी गई थी, पहले उसके शौहर, बादशाह जहाँगीर के प्रतिशोधी उत्तराधिकारियों द्वारा, इसके बाद उपनिवेशवादी इतिहासकारों द्वारा और अंततः ऐसे राष्ट्रवादियों द्वारा, जो साम्राज्य का अपना इतिहास लिखना चाहते थे...एक दिलकश कहानी."

— राफिया ज़कारिया, *द गार्जियन*

"हालांकि रूबी लाल को बहुत कम उपलब्ध इतिहास के साथ अपना काम करना था, फिर भी उन्होंने नूर के जीवन के समृद्ध विस्तृत दृश्यों को उकेरा है... लेखिका बहुत कुशलतापूर्वक पाठक का मार्गदर्शन करती हैं और इसके लिए उन्होंने जहाँगीर (जिसके साथ नूर ने कुली की हत्या के बाद निकाह किया था) के साथ नूर के जीवन के बाद के हिस्से के बारे में पर्याप्त नाटक सदृश और पेचीदा घटनाओं को माध्यम बनाया है. रूबी लाल ने उन पाठकों की बहुत मदद की है, जिनकी रुचि मुग़ल-काल और भारतीय इतिहास की भुला दी गईं या कम याद की गईं महिलाओं के बारे में है. उन्होंने उस रहस्यमय चरित्र पर थोड़ी रोशनी डालने में भी मदद की है, जिसके बारे में जानकारी रखने का कई लोगों को विश्वास है लेकिन वास्तव में कुछ ही उसे समझते हैं."

— विकास बजाज, *न्यू यॉर्क टाइम्स बुक रिव्यू*

"मलिका नूर जहाँ की ज़िंदगी के बारे में रूबी लाल का अद्भुत विवरण बहुत लुभावना, प्रेरक और आज 21वीं सदी के अमेरिका में रह रहे हम लोगों के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना यह 17वीं सदी के भारत में उसके समय में था."

— अजर नफ़ीसी, *रीडिंग लोलिता इन तेहरान* की लेखिका

"एमरी यूनिवर्सिटी में साउथ एशियन स्टडीज़ की प्रोफेसर रूबी लाल नूर जहाँ की ज़िंदगी और विरासत की घिसी-पिटी कपोल-कल्पना को चुनौती देती हैं... राजकुमारी डायना, मदर टेरेसा और एनी ओकली का मेल, उनकी मलिका दुर्लभ इंसान है. "

— मैक्सवेल कार्टर, *द वॉल स्ट्रीट जर्नल*

"...रूबी लाल की 'एम्प्रेस : द एस्टोनिशिंग रेन ऑफ़ नूर जहाँ' उत्कृष्ट है. यह मुग़ल-साम्राज्य की पहली और एकमात्र महिला शासक की कहानी है."

— सिमोन हेफ़र, *हिस्ट्री बुक्स ऑफ़ द ईयर 2018, द टेलीग्राफ*

"...एक विलक्षण महिला का दिलचस्प चित्रण, बल्कि यह मुग़ल जीवन के एक आकर्षक हिस्से को नए रूप में ढालकर पेश भी करती है."

— समीर रहीम, *द टेलीग्राफ*

"यह एक शानदार किताब है, न केवल अविश्वसनीय रूप से महत्त्वपूर्ण बल्कि लेखन का भी उत्कृष्ट नमूना. यहां भारत की महानतम मलिका ने अपनी ज़िंदगी और समय के चमकते विवरण में अपनी संपूर्ण आकर्षक महिमा के साथ फिर से जन्म लिया है. रूबी लाल ने श्रेष्ठ लेखन किया है — इस साल आने वाली सर्वश्रेष्ठ जीवनियों में से एक, और निश्चित रूप से नूर जहाँ की सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ."

— अमांडा फ़ोरमैन, *द वर्ल्ड मेड बाय वीमन* की लेखिका

"मिस लाल ने न सिर्फ़ संशोधित स्त्रीवादी जीवनी लिखी है; बल्कि उन्होंने मुग़ल दरबार की जीवंत तस्वीर भी प्रस्तुत की है, जिसमें इसकी विलासिता, सुंदरता, साज़िशें और भय साफ़ दिखाई देते हैं. इसके अतिरिक्त, ऐसे समय में, जब भारत की हिंदू-राष्ट्रवादी सरकार देश के इतिहास में एक ओर झुकाव पर ज़ोर देना पसंद करती है, वह भारतीय परंपरा की विविधता की याद दिलाती हैं."

— *इकोनॉमिस्ट*

"रूबी लाल यह दर्शाती हैं कि (नूर के) शासन ने महिला सशक्तीकरण पर स्थायी प्रभाव डाला, जिसने शाही बेगमों को हरम से आगे बढ़कर आदेशों की प्रभावशाली शृंखला जारी करने में सक्षम बनाया."

— *द न्यू यॉर्कर*

"इस जीवनी से नूर जहाँ एक जोशीली, बुद्धिमान और प्रतिभासंपन्न नेता के रूप में सामने आती है. लाल ने नूर की कहानी को मुग़ल-साम्राज्य के शानदार वैभव के भव्य, जटिल चित्रण में पिरोया है. साथ ही यह बताया है कि किस प्रकार इसकी

राजनीतिक, सैन्य और सांस्कृतिक नियति को इस असाधारण महिला ने आकार दिया, जो शरणार्थी से मलिका बन गई."

— गारेथ रसेल, *यंग ऐंड डैम ऐंड फ़ेयर* के लेखक

"रूबी लाल... बहुत समृद्ध रूप से विभिन्न विषयों का चित्र-पटल तैयार करती हैं... उन्होंने ऐसे संदर्भ और प्रमाण दिए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि नूर के इर्द-गिर्द के माहौल, इतिहास और समकालीनों के कारण, वह संभवत: प्रगतिशील, सांसारिक, बहुप्रतिभावान और आरंभ से ही आगे का सोचने वाली महिला योद्धा थी... लाल ने नूर को कृपा दर्शाने वाले उन तौर-तरीक़ों से बाहर निकाला, जिनमें पूर्ववर्ती विवरणकारों ने उसे महत्त्वहीन, कमतर बनाया था और उसकी उपलब्धियों का मान घटा दिया था. "

— गैरी सिंह, *लॉस एंजेल्स रिव्यू ऑफ़ बुक्स*

"एक विलक्षण महिला का क्या असाधारण और विस्तृत विवरण है - अद्भुत! बहुत प्रभावी, संपूर्ण, काव्यात्मक, मानवीय कार्य."

— दीपा मेहता, फ़िल्म निर्माता और स्क्रीन राइटर

"भारत की पहली महिला रहनुमा को विनम्र श्रद्धांजलि के साथ शानदार मुग़ल-साम्राज्य की करामाती पुनर्रचना. यह ठाठदार और भावमय महिला पुस्तक में आभूषण की भांति है.''

— रोज़ालिंड माइल्स, *द वीमन'स हिस्ट्री ऑफ़ द वर्ल्ड* की लेखिका

"इस शानदार, स्त्रीवादी, और कथा इतिहास के गहरे शोध-कार्य के साथ, रूबी लाल ने महान मलिका नूर जहाँ को उसकी पूरी ठाठ-बाट और सत्ता के स्वरूप में जीवंतता प्रदान की है. ''

— मौली क्रैपबल, *ड्राइंग ब्लड ऐंड ब्रदर्स ऑफ़ द गन* के लेखक

"लाल की किताब उस महिला और उसके द्वारा जीती गई दुनिया को समझने में हमारी सहायता करती है. *एम्प्रेस* अपने अद्वितीय शिल्प, संवेदना, स्रोतों के गहराई से अध्ययन, मुग़ल दरबार की शान-औ-शौकत की कल्पनाशील पुनर्रचना, इंसानी माध्यम और इतिहास की ताक़त के पारस्परिक प्रभाव के अतुलनीय प्रस्तुतिकरण के कारण उत्कृष्ट रचना है. यह प्रथम श्रेणी की इतिहासकार की सर्वश्रेष्ठ रचना है."

— रुद्रांग्शु मुखर्जी, *बिजनेस स्टैंडर्ड*

"नूर जहाँ मुग़ल बादशाह जहाँगीर की 20वीं और आख़िरी बेगम थी. रूबी लाल की अद्भुत *एम्प्रेस* के संदर्भ में, वह साम्राज्य की प्रभावी सह-शासक थी, जो

आदेश देती थी और शेरों का शिकार करती थी और इस दौरान पुरुषों जैसे कपड़े पहनती थी."

— प्रोस्पेक्ट्स बुक्स ऑफ़ 2018 — इतिहास, *प्रोस्पेक्ट्स*

"उसकी ज़िंदगी का वृत्तांत लिखते हुए, लाल ने शैक्षणिक परिपक्वता और कुछ मौन प्रशंसा, दोनों का प्रदर्शन किया है. शैक्षणिक परिपक्वता से उनके शोध की संपूर्णता प्रमाणित होती है, जबकि दूसरे पहलू से आप पन्ने पलटते चले जाते हैं. नूर जहाँ की भांति विस्मयकारी प्रेरणादायक कहानी के लिए उनसे बेहतर कहानीकार नहीं हो सकता था"

— एकता कपूर, *ई-शी मैगज़ीन*

"रूबी लाल ने उस समय के दक्षिण एशिया को जीवंतता प्रदान की है, जब मुसलमान, हिंदू और विभिन्न जातियां मुग़ल-शासन के अंतर्गत सांस्कृतिक रूप से मिल-जुलकर रहती थीं."

— डेविड लुहरसेन, शेफर्ड

"महिलाओं को यह मार्मिक स्मरण कि एक समान आवाज़ के लिए संघर्ष हज़ार बरसों तक सत्य रहा है और यह कि भले ही महिलाओं के नेतृत्व की निंदा की जाए, फिर भी अविश्वसनीय स्रोतों से प्रेरणा ली जा सकती है."

— गिरिजा शंकर, *ख़बर*

"लाल की जीवनी, विश्व-इतिहास में सर्वाधिक शक्तिशाली महिला, नूर के राजनीतिक उत्थान और शासन पर ध्यान केंद्रित करने वाली पहली पुस्तक है."

— अप्रैल हंट, *एमरी न्यूज़ सेंटर*

"लाल की किताब शोध से भरपूर तो है ही, साथ ही एक उपन्यास के लिए उपयुक्त नाटक के भाव के साथ इसे प्रस्तुत भी करती है."

— सोमैक घोषाल, *लाइव मिंट*

"रूबी लाल उन तरीक़ों को पूर्ववत करने का प्रयास करती हैं, जिनमें (नूर) के व्यक्तित्व को केवल प्रेम का विषय बनाने तक कम कर दिया गया."

— सोनी वाधवा, *एशियन रिव्यू ऑफ़ बुक्स*

"*एम्प्रेस* दिलचस्प, समृद्ध और भारत की पहली महिला शासक की याद ताज़ा करने वाला वर्णन है. लाल दर्शाती हैं कि नूर जहाँ की कहानी अभी तक ज्ञात विवरण से अत्यधिक जटिल — और असाधारण है... सुंदर स्वरूप में लिखी गई और गहरे शोध से तैयार *एम्प्रेस* नूर की जीवनी पर रोशनी डालती है और हमें

मुग़ल-साम्राज्य के आकर्षक इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण अध्याय के बारे में जागरूक करती है."

— *इंडिया न्यू इंग्लैंड न्यूज़*

"नूर जहाँ की बहुत शोध के साथ तैयार की गई जीवनी. यह स्वाभाविक है कि मुग़ल-इतिहास में इस महत्त्वपूर्ण अध्याय की कड़ियों को जोड़ने के लिए धैर्य, लगन और विवरण जुटाने के लिए श्रमसाध्य मनोयोग की आवश्यकता पड़ी होगी. और इसके सराहनीय परिणाम दिखाई दे रहे हैं."

— नीतीश रेले, *द ब्रिज टू कॉलेज*

"लाल ने नूर जहाँ को इतिहास के ठहरे हुए जल से बाहर निकाला है और उसकी पहचान मज़बूत, आज़ाद महिलाओं की नई पीढ़ी से कराई है."

— बेथ फिश, *बेथ फिश रीड्स*

"(रूबी लाल) ने नूर जहाँ के इतिहास को नष्ट होने से बचाने के लिए आश्चर्यजनक काम किया है और इस बात का आधार तैयार किया है कि वह अपने विचारों, जुनून और चरित्र के माध्यम से अत्यधिक प्रतिष्ठा वाली महिला बन जाए. चाहे आप इतिहास के विद्यार्थी हों या साहित्य के, इस पुस्तक के पन्ने पलट सकते हैं. यह इस क्षेत्र की किसी अन्य पुस्तक में नहीं मिलता. "

— आयशा रफ़ीक, *डेली टाइम्स पाकिस्तान*

"*एम्प्रेस* जीवन और रहस्य के साथ धमाका करती है, यह पहली नज़र में ही संतुष्ट करने वाली और मोहक है. रूबी लाल ने लिखित इतिहास की सतही झलक के बीच से एक महिला की तस्वीर उकेरी है. उन्होंने वह किया है, जो मानविकी पर ध्यान देने वाला कोई भी निपुण और भली-भांति प्रशिक्षित व्यक्ति करेगा. — दिलचस्प विश्लेषण, जिनसे लंबे समय से शेल्फ़ में धूल खा रहे निष्कर्ष सामने आ सकें."

— *द मार्वेलिस्ट*

"आगरा के बारे में लेखक का विवरण शानदार है, और नूर की परवरिश का उनका विस्तृत ब्योरा उनके लंबे अध्ययन, गहरी समझ और कम टटोले गए विषय पर आधुनिक रुख़ को प्रदर्शित करता है... नूर को इतिहास की महानतम स्वतंत्र और शक्तिशाली महिलाओं में से एक माना जाना चाहिए. पन्नों में बांध लेने वाली और आंखें खोलने वाली जीवनी, जो ब्रिटिश-राज द्वारा हमारे सामने स्थापित की गई भारत की छवि को तोड़ती है."

— *किरकस रिव्यूज़* (स्टार्ड)

"एक ताक़तवर और आज़ाद मुस्लिम महिला को मध्यवर्ती सदियों के दौरान लोकप्रिय कल्पना में केवल पत्नीसुलभ निष्ठा तक सीमित कर दिया गया था, इस महिला की इस स्त्रीवादी जीवनी में लाल ने अपने विषय की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया है... सजगता से किए शोध और सजीव लेखन से युक्त यह पुस्तक ज़ोरदार तरीक़े से यह सामने लाती है कि सच भी भ्रम की भांति असाधारण और दिलचस्प है. "

— *पब्लिशर्स वीकली* (स्टार्ड)

"अपने विषय और उसके रहने के स्थान पर विशद दृष्टि. महिला शासकों में रुचि रखने वाले इतिहास के पाठकों के लिए उत्कृष्ट चयन."

— *लाइब्रेरी जरनल*

"महिला शक्ति की मनोरंजक कहानी. "

— *शेल्फ़ अवेयरनेस*